⁂ अद्भुत राम नामके अंक ⁂

[ले० वैदेहीकान्त शरण]

अदभुत राम नाम के अङ्क ।
धर्मअंकुर के पावन द्वै दल मुक्ति वधू ताटंक ॥
मुनि मन हंस पच्छ जुग, जाकै बल उडि ऊरध जात ।
जनम मरन काटन को कर्त्तरि तीछन बहु विख्यात ॥
अंधकार अज्ञान हरन कौ रवि ससि जुगल प्रकास ।
वासर निसि दोउ करै प्रकासित महाकुमग अनयास ॥
दुहु लोक सुख करन हरन दुःख वेद पुराननि साखि ।
भक्ति ज्ञान के पंथसूर ये प्रेम निरन्तर भाखि ॥
सूरसागर—नाममहिमा—विनय—पद्य ९०॥

उक्त पद्य अक्षरसः प्रमाण सिद्ध हैं । सूरदास जी ने राम नाम के रहस्यों का उद्घाटन किया हैं । अतः इसकी उपपत्ति पूर्ण व्याख्या की जा रही हैं । वेद ने भगवान के नाम का मनन करने का उपदेश दिया है=

"मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे-ऋ. ८।११।५॥"

अद्भूत राम नाम अङ्क के= अद्भूत का अर्थ आश्चर्य, विस्मय, चित्र होता है। 'जो नहि देखा नहि सुना जो मनहुँ न समाय'वाले विषय वस्तु को देख या सुनकर आश्चर्य होता है । इस प्रकार सभी दृष्ट-श्रुत विषय वस्तुओं से विलक्षण सभी व्यावर्तक विशेष विषय वस्तु अद्भूत

कहा जाता है। उक्त वाक्य में यद्यपि इस अन्वय प्रधान रूप से 'अङ्क' पद के साथ हैं तथापि इसका अन्वय राम' एवं नाम' पदों के साथ भी है। अतः उक्त वाक्य खण्ड का विश्लेषित तीन अर्थ है- अद्भूत राम' ,अद्भूत नाम और अद्भूत अङ्क'। यद्यपि तत्वतः तीनों ही एक ही वस्तु हैं तथापि आपाततः ये तीन दृष्टिगोचर होते हैं। वैशेषिकदर्शन के भाष्यकार प्रशस्तपादाचार्य ने पदार्थ धर्म संग्रह में पदार्थों का तीन समान लक्षण कहा है- १ अस्तित्व २ अभिधेयत्व और ज्ञेयत्व— षण्णामपि पदार्थनामस्तित्वाभिधेयत्व ज्ञेयत्वानि " योगसूत्रकार महर्षि पतञ्जलि ने केवल शब्दज्ञानानुपाती अर्थात् शब्द मात्र हो एवं वस्तु शून्य हो अर्थात् जिसका विषय वास्तव में नहीं हो उसे 'विकल्प' कहा है-शब्दज्ञानानुपातो वस्तु शून्यो विकल्पः -यो.सू. १।९।" पुनः शब्द (नाम) अर्थ (रूप) और ज्ञान-इन तीनों को भिन्नता बतलाया है- शब्दार्थप्रत्ययानामितरेतराध्यासात् संकरस्तत्प्रविभागसंयमात् सर्वभूतरुतज्ञानम् यो सू. ३।१७॥" वस्तु के नाम, रूप और ज्ञान— ये तीनों परस्पर भिन्न हैं। घट शब्द (नाम) मीट्टी से बने हुये जिस घट (रूप) मूर्त पदार्थ का द्योतन करता है उससे सर्वथा भिन्न है घट शब्द और घट पदार्थ में भिन्नत्व है। इसी प्रकार उस घट रूप पदार्थ की जो प्रतीति (ज्ञान) होती है, वह चित्त की वृत्ति विशेष और ज्ञाता निष्ठ है' इस प्रकार तीनों में परस्पर भिन्नता है। शब्द (नाम) वाणी का धर्म है घटरूप पदार्थ मृत्तिका का धर्म है और ज्ञान (वृत्ति) चित्त का धर्म है। इस प्रकार रामशब्द (नाम) राम पदार्थ एवं राम का ज्ञान-ये तीनों परस्पर भिन्न पदार्थ सिद्ध होते हैं। परन्तु यह नियम रामेतर संसारिक विषय वस्तुओं में ही लागू होता है राम में नहीं। अतः यह राम का नाम रूप ज्ञान--तीनो ही अद्भूत (आश्चर्य का विषय कहे गए हैं। क्योंकि ये स्वेतर विलक्षण हैं। राम के नाम और रूप में जो भिन्नता प्रतीत होती है वह औपाधिक (उपसमीपवर्तिनि समाना

धिकरणे स्वधर्म व्याप्तिमादधाति बोधयति इति उपाधि शब्दो जवाकुसुमादि साधारणः) है वास्तविक नहीं अतः ज गु. श्री तुलसी दास जी कहते हैं— नाम रूप दुइ ईश उपाधी । अकथ अनादि सुसामुझि साधी ।।" राम के नाम एवं राम एकसमान (एक) हैं– समुझत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति प्रभु भनुगामी ॥ अव्यापक वस्तुओं के नाम-रूप–ज्ञान में देशिक एवं कालिक पार्थक्य तथा भिन्नता होती है । परन्तु सर्वव्यापक चरम तत्त्व परात्पर ब्रह्म श्री राम के नाम–रूप–ज्ञान का पार्थक्य सम्भव ही नहीं है । सभी में समव्याप्ति या सामवायिक अविच्छेद्य नित्यसाहचर्य्य (व्याप्ति) होने से अपृथक्सिद्धि सम्बन्ध के कारण पूर्ण तदाम्य एवं ऐक्य है । जिस देश और काल में जहां और जब राम नाम है वहाँ राम पदार्थ भी है । ज.गु.श्री तुलसीदास जी ने कहा है- देखिअहिं रूप नाम आधीना ! रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना ।।" अतएव उपरोक्त १ अद्भुत राम २ अद्भुत नाम और ३ अद्भुत अङ्क- ये तीनों ही अन्वय पूर्णतः निष्पन्न हैं ।

श्री रामनाम की अद्भुतता की सिद्धि के लिये श्रीराम को उक्त पद्य में १अङ्ग, २ द्वैदल, ३ ताटंक, ४ हंस, ५ कर्त्तरि, ६ रवि शशिप्रकाश ७ पंथ एवं ८ प्रेमवचन रूपों में प्रतिपादित किया गया है । जिनकी व्याख्या की जा रही है ।

'अद्भुत राम नाम के अङ्ग' वाक्य खण्ड के अद्भुत पद की व्याख्या हो चुकी । राम पद की व्याख्या करना सूर्य को दीपक दिखाना है- 'जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू ।" रामसच्चिदानन्द दिनेशा । नहि तहँ मोह निशा लवलेशा ।।" श्रुति ने कहा है– रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि । इति राम पदेनासौ परब्रह्माभिधीयते" रामतापतीयोपनिषद् ॥

नाम पद की भी व्याख्या अधिक करनी नहीं है। निरुक्त में कहा गया है-'' भाव प्रधानम् आख्यातं। सत्व प्रधानानि नामानि। लिङ् संख्यान्वितं द्रव्यं सत्वम् इत्यभिधीयते। वृहद्देवता कार ने लिखा है कि जिस शब्द के उच्चारण करने से द्रव्य की प्रधान रूप से प्रतीति हो उसे नाम कहते हैं।

शब्देनोच्चरितेनेह येन द्रव्यं प्रतीयते।
तदक्षरविधौ युक्तं नामेत्याहुर्मनीषिणः॥
अष्टौ यत्र प्रयुज्यन्ते नानार्थेषु विभक्तयः।
तन्नामकवयः प्राहुर्भेदे वचनलिङ्गयोः॥

व्याकरण शास्त्र एवं मीमांसा दर्शन के अनुसार शब्द नित्य है। अतएव नित्य वस्तुओं के नाम नित्य हैं। श्री राम नित्य हैं तथा च उनका नाम भी नित्य है। श्री रामानन्द सम्प्रदाय में भी श्री राम का नाम नित्य माना जाता हैं। नैनायिक लोग संज्ञा-संज्ञी के सम्बन्ध को शक्ति कहते हैं और इसे ईश्वर कर्तृत्व मानते हैं- "संज्ञा परम् संज्ञो अर्थः तयोः सम्बन्धः शक्तिः-न्या. बो.।" अस्मात् पदात् अयमर्थः बोद्धव्यः इति ईश्वर संकेतः शक्तिः- त. सं।'

अद्भुत पदका पर्याय चित्र होता है एवं लिगि चित्री करणे। लिङ्गयति। धातु से लिङ्ग शब्द बनता है। लिङ्ग के द्वारा लिङ्गी का अनुमान होता है। इस लिङ्ग के पर्याय शब्द वैशेषिक दर्शन में हेतु, उपदेश लिङ्ग प्रमाण और कारण पद कहे गए हैं-

हेतुरुपदेशोलिङ्गम् प्रमाणं करणमित्यर्थान्तरम्''
वै. सू. ९।२।४॥''

इस प्रकार यह रामनाम हेतु उपदेश लिङ्ग प्रमाण वा करण है जिसके द्वारा लिङ्गी राम एवं सम्पूर्ण जगत् (तस्माद्रामस्य रूपोऽयं सत्यंसत्यमिदं जगत्) का प्रमाणीकरण और अनुमान सिद्ध होने से भी रामनाम अद्भूत (चित्र) सिद्ध है। विश्व के प्रत्येक विषय वस्तुओं का ज्ञापक एवं प्राप्ति का साधन होने से रामनाम अद्भुत है– जाना चहसि गूढ गति जेउ। तदपि नाम जपि जानेउ सोउ ॥ साधक नाम जपहि लय लाये। होहिं सिद्धि अणिमादिक पाये ॥

श्री राम नाम नित्य है चेतन है प्रकाश रूप है और अपने वाच्य राम के समान है। जं गुं श्री तुलसीदास जी कहते है–

"संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनम्।
धन्यास्ते कृतिनः पिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥"

अब अङ्क पद की व्याख्या की जाती है। अङ्क पद के उत्सङ्ग (गोद) चिह्न संख्या लेख लक्षण, आदि अनेकों अर्थ होते हैं। यहाँ राम पद की व्याप्ति अङ्क पद के उक्त सभी प्रकार के अर्थों के साथ है। यह अङ्क पद कुअङ्क का विरोधी एवं व्यावर्तक रूप में भी है।

"मन्त्र महामणि विषय व्याल के।
मेटत कठिन कुअङ्क भाल के ॥"

गणित की संख्या के अर्थ में इस अङ्क के सम्बन्ध में कहा गया है–

"राम नाम एक अङ्क है, सब साधन है शून।
नाम गये कछु हाथ नहिं, नाम रहे दश न गून॥"

इस प्रकार सभी पदों की व्याख्याओ के समुच्चय से अद्‌भूत रामनाम के अङ्क वाक्य खण्ड की व्याख्या हो गयी। रामनाम का अद्वितीयत्व विलक्षणत्व एवं अद्‌भुत प्रतिपादित हो गया

धर्म अंकुर के पावन द्वय दल :—

धर्म पदके पुण्य, आचार, स्वभाव, उपक्रम, उपनिषद् न्याय आदि अनेको अर्थ होते हैं।

अंकुर पद पूर्व प्रयुक्त अङ्क पद का ही उन्नत रूप है—"अङ्काः उन्नता अस्य सन्ति अंकुरः।" अंकुर नाम बीज को वेधकर उसमें से निकले नवीन प्ररोह का है—"अंकुरोऽभिनवोद्भिदि- अ.को. २।४।४। इस प्रकार अंकुर मूल विकास विन्दु है।

पावना का अर्थ है पवित्र बनानेवाला कलुषका मार्जन करने-वाला।

द्वय पद संख्यावाचक है एवं प्रकार वाचक है। दल पद का अर्थ पर्ण या पत्ता है।

इस प्रकार उक्त वाक्य खण्ड का अर्थ हुआ कि रामनाम के अद्‌भुत अङ्क धर्म अंकुर के पवित्र बनानेवाले दोनों पत्ते हैं। परन्तु धर्म अंकुर के ये पवित्र बनानेवाले दो पत्ते कैसे कहे गये हैं ?

इस प्रश्न के उत्तर को समझने के पहले धर्म के दो पत्तों को समझना होगा।

कणाद ने कहा है कि जिससे अभ्युदय (सांसारिक उन्नति) एवं निःश्रेयस (मोक्ष) की प्राप्ति हो वह धर्म है—

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयसाधिगमः स धर्मः—वै० सू० १।१।२॥

इसप्रकार धर्म अंकुर के दो दल (पत्र) १ अभ्युदय एवं २ निःश्रेयस हुये ।

योगसूत्र में यम [यम उपर मे विरमे—अर्थात् निषेध (अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहा यमाः)] तथा नियम [विधि (शौच-सन्तोष-तपः स्वाध्याय-ईश्वर प्रणिधनानि नियमाः] इन दो दलों का निरूपण है । इस प्रकार विधि और निषेध ये ही धर्म अंकुर के दो दल हैं ।

योग साधना (प्राणायाम) धर्म के पावन दो दल प्राण एवं अमान वायु हैं । एवं चित्त निरोध के अभ्यास एवं वैराग्य—ये दो पत्ते हैं ।

श्रीरामनाम के प्रकरण में 'विधि निषेधमय कलिमल हरणी ।" तथा लोक लाहु पर लोक निवाहु आदि कहा गया है । भयउ शुद्ध करि उलटा जापू' भी कहा गया है । अतः इसे धर्म अंकुर के पावन द्वय दल' कहना सिद्ध है ।

मुक्ति वधू ताटंक :—

मुक्तिः शब्द स्त्रीलिङ्ग है । स्त्रियों को आभूषण बहुत प्रिय होता है—अलङ्कार प्रिया नारी । रामनाम के सम्बन्ध में ज.गु. श्रीतुलसी दासजीने कहा है—भगति सुतिय कल करण विभूषण । जगहित हेतु विमल विधु पूषण ॥ यह रामनाम कर्ण का विषय है । अतः यह कर्णा भूषण ताटंक) है एवं इसके लिये मुक्ति वधु उत्कण्ठित होकर प्रवृत्त होती है ।

मुनिमनहंसपच्छ जुगः—

ज गु श्री तुलसीदासजी ने भी श्रीरामनामानुरागियों के मन के सम्बन्ध में लिखा है—सेवक मन मानस मराल से। मुनि पद का अर्थ है मनन करनेवाले मन पद का अर्थ है मननसाधनेन्द्रिय। मनन के दो परिघटक हैं श्रवण एवं मनन। आत्मा वा रे श्रोतव्यः मन्तव्यश्च। श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यो मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः।" यही मुनि (मनन करनेवाले) के मनरूपी हंस (मननसाधनेन्द्रिय नीरक्षीर विवेक) के दोनों पक्ष हैं। अथवा मननकरनेवाले हंस रूप मनके प्रमाण (प्रमायाः करणं प्रमाणम्' अर्थोपलब्धिहेतुः प्रमाणम्) एवं तर्क (तर्क्यन्ते प्रमा विषयीक्रियन्ते इति तर्काः)—ये दोनों पक्ष हैं। वेदों में हंसों से उपमा श्रेणिवद्ध (नियमित) एवं नियमेन इयते इति न्यायः के अनुसार व्यवस्थित ज्ञान के प्रयोजक के लिये दिया गया है—

हंसा इव श्रेणिशो यतानाः शुक्रावसानाः स्वरवो न आगुः।
उन्नमानाः कविभिः पुरस्ताद् देवानामपि यन्ति पाथः॥

ऋ० ३।८।९॥"

पुनः हंसों के समान श्लोकों का उच्चारण करने के लिये कहा गया है—

हंसा इव कृणुथ श्लोक मद्रिभिर्मदन्तोगीर्भिरध्वरे सुते सचा।
देवेभिर्विप्रा ऋषयोनृचक्षसोविपिवध्वं कुशिकाः सोम्य मधु

॥ऋ० ३।५३।१०॥"

वेद में स्वर्ग गमन के लिये हंस के पाँखों फैलने की बात है—

सहस्राह्ण्यं वियतावस्य पक्षौ हरेर्हंसस्य पततः स्वर्गम्।
स देवान्त्सर्वानुरस्युपदद्य संपश्यन् याति भुवनानि विश्वा॥

अथर्व १०।८।१८॥"

सहस्र दिनों तक स्वर्ग गमन के लिये पापों का नाश करनेवाले हंस का दोनों पक्ष (पङ्ख) फैले रहते हैं ।

इसी को लक्ष्य कर यहाँ कहा गया है जा कैं बल उडि ऊरध जात ।'

यहाँ रामनाम के 'रा' अक्षर ज्ञान के वाचक हैं क्योंकि इसके घटक अग्नि बीज 'र' (ज्ञानाग्निदग्ध कर्माणं तमाहु पण्डितं बुधाः– गीता...। तथा आदित्य बीज 'आ' (तेषामादित्य वज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्– गी० ५।१६) ज्ञान के बोधक हैं, तथा चन्द्र बीज 'म्' भक्ति (मः शिवः (रामभक्त) चन्द्रमा (भक्तयानन्द) वेधा–ए०को० २८) का बोधक है इसकी सिद्धि– यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् । यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ गी० १५।१२'' वाक्य से भी होती है । अतः रामनान रुपी हंस केज्ञान एवं भक्ति रुपी दोनों पक्ष हैं । इन से उड़ कर उर्ध्व लोक जाना स्वतः सिद्ध है । अतः राम नाम के दोनों अक्षरो रा' और म' का मुनि मन हंस पक्ष युग का कहना उपपन्न है ।

जाकैं बल उडि ऊरध जात :—

क्रिया के सम्पादक ऊर्जा का नाम बल है । गीता में कहा गया है– ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्वस्था– गी० १४।१८॥ उपरोक्त अथर्वमन्त्र के साथ पठित मंत्र में लिखा है–

सत्येनोर्ध्वस्तपति ब्रह्मगार्वाङ् विपश्यति प्राणेन तिर्यङ् प्रणति यस्मिन्ज्जेष्ठमधिश्रितम् ॥ अथर्व० १०।८।१९॥''

अतः उक्त रामनाम रुपी मुनि मन हंस पंखो से ऊरध उड़ि जात का

अर्थ ऊर्ध्व लोक (साकेत) की प्राप्तिका ज्ञापन है ।
जनम मरण काटन कौं कर्त्तरि तीक्ष्ण बहुत विख्यात—

जन्म मरण का चक्र एक बन्धन या फन्दा है और पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम् का चक्र बन्धन लगा रहता है । इस बन्धन को काटने के लिये राम नाम को तीक्ष्ण कर्त्तरि (कैंची) कहा गया है । कैंची का मुख खूलने एवं बन्द होने से कर्त्तन क्रिया सम्पादित होती है । राम नाम के सम्बन्ध में ज० गु० श्री तुलसीदास जी ने कहा है—

तुलसी रा के कहत ही निकसत पाप पहाड़ ।
पुनः भीतर आवै नहिं, देत मकार किवाड़ ॥"

अतः राम राम के उच्चार करते समय ठीक कैंची के मुख के समान मुख खूलता और बन्द होता रहता है तथा पाप एवं भव बन्धन के कर्त्तन को क्रिया सम्पादित होती है । दोनों ओठ कैंची के दोनों फल्ली तथा रा और म उन अधर कर्त्तरि के फल्लियों के तीक्ष्ण धार का कार्य करते हैं ।

यहाँ कर्त्तरि शब्द विचारणीय है । कर्त शैथिल्ये कर्तयति-कर्तति' तत्करोति तदाचष्टे से कर्तरि शब्द निष्पन्न है ।
"कर्त का वर्ण विन्यास से 'तर्क', शब्द बनता है तर्क तर्क ने । कर्त एवं तर्क दोनो ही कैंची (कतरने) का ही कार्य करते हैं । कैंची स्थूल वस्तुओं को कतरता है और तर्क शब्दावली को । संस्कृत भाषा में इसीप्रकार वर्णव्यत्यास से बने जल' धातु और लज' धातु एवं तप धातु तथा पत धातु का एक ही अर्थ होता है । अर्थ वैपरित्य नहीं होता जबकि वर्ण वैपरित्य होता है । अतः राम नाम

रूपी तर्क से (तर्को शंकावधिर्मतः —न्या० कु०) संशयो का कर्त्तन कर तत्व ज्ञान (यथार्थ ज्ञान) की प्राप्ति ऊर्ध्व लोक की प्राप्ति सिद्ध है ।

अंधकार अज्ञान हरण कौं रवि शशि युगल प्रकाश—

ज्ञान प्रकाश है (अर्थ प्रकाशो बुद्धिः) और अज्ञान अंधकार । अंधकार का विरोधी एवं व्यावर्तक प्रकाश होता है । भगवान् ने कहा है– तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाभ्यात्म भावस्थो ज्ञानदीपेन भावस्ता ।।"

परन्तु राम नाम तो दीप नहीं अपितु रवि (सूर्य) और शशि (चन्द्र) है दिनमणि एवं निशामणि दोनो है । रा (आदित्य) म (चन्द्रमा) । अतः दिन रात दोनो में प्रकाशित करने वाला है जो आगे कहा गया है– वासर निशि दोउ करै प्रकाशित"

ज० गु० श्री तुलसी दास जी ने रामनाम को इसलिये— हरण मोह तम दिनकर कर से ।' कहा हैं। रवि उष्ण रश्मि हैं एवं चन्द्र शीत रश्मि । रवि ज्ञान का प्रतीक है एवं चन्द्र भक्ति का । इस प्रकार राम नाम ज्ञान एवं भक्ति दोनों का स्वरूप है । अज्ञान का अंधकार ज्ञान से भी नष्ट होता है एवं भक्ति से भी । ज० गु. श्रीतुलसीदास जी ने कहा है जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू " उपनिषद् ने कहा है तस्य भासा सर्वमिदं विभाति—कठ० मुण्ड० ।" वेद ने कहा है– कि जब यह श्रेष्ठ ज्योतियों की ज्योति प्राप्त होती हैं तब उसकी

व्याप्ति से विचित्र ज्ञान उत्पन्न होता है-"इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा। यथा प्रसूता सवितुः सवायैवारात्र्युषसे योनि मारैक्॥ सा० १७४७ =ऋ. १।११३।१॥"

राम नाम के अजपा जप अथवा प्राणायामाभ्यास अथवा अर्थ चिन्तन अथवा ध्यान से ऋतम्भरा प्रज्ञा उत्पन्न होती है और उससे सर्व विध अज्ञानों का नाश होकर पूर्ण ज्ञान प्रकाश की अनुभूति होती है।

बासर निशि दोउ करैं प्रकाशित महा कुमग अनयास

उपरोक्त ज्ञान प्रकाश दिन और रात-जागृति और सुषुप्ति दोनों हीं में प्रकाश देनेवाले हैं। निशि का अर्थ. केवल यह रात्रि नहीं अपितु अज्ञान रात्रि है—

"या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः
गी०२।६९

"मोह निशा सब सोव निहारा। देखिअ सपन अनेक प्रकारा॥

एहि जग यामिनी जागहिं योगी। परमारथी प्रपंच वियोगी जनिअ तबहिं जीवजव जागा। जब सब विषय विलास विरागा॥

होइ विवेक मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरण अनुरागा। सखा परम परमारथ एहू। मन क्रम वचन राम पद नेहू॥

राम ब्रह्म परमारथ रूपा । अविगत अलख अनादि अनूपा ॥
सकल बिकार रहित गत भेदा । कहि नित नेति निरूपहि वेदा ॥

रामनाम मणि दीप धरु, जीह देहरीं द्वार ।
तुलसी भीतर बाहे रहू जौ चाहसि उजियार

राम जीहँ जपि जागहिं योगी । बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी
ब्रह्म सुखहि अनुभवहि अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा
जाना चहहिं गूढ गति जेऊ । नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लय लाएँ । होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएं ॥
जपहिं नाम जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी

इस प्रकार राम नाम का जप निशि वासर दोनों को प्रकाशित कर निशि (अज्ञान) एव वासर (ज्ञान) दोनों का ज्ञापन करता है ।

महामग कहते है राजमार्ग को और कुमग कहते है खतरनाक और दुःखद मार्ग को । यह राम नाम का अभ्यास पथ एवं कुपथ दोनों का ज्ञापक हैं । अतः कहा है—"वासर निशि दोउ करैं प्रकाशित महा कुमग अनयास ।"

दुहु लोक सुख करण हरण दु ख वेद पुराणनि साखिः-

दुहु लोक नाम हैं—इसलोक और परलोक का रामनाम के सम्बन्ध में मानस कहते हैं—

"सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू ।
लोक लाभ परलोक निबाहू ॥"

इन दोनों लोकों में यह लोक तो प्रत्यक्ष है एवं इसे सभी मानते हैं। परन्तु परलोक परोक्ष है। इसे नहीं माननेवाले को नास्तिक कहते हैं—"अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः-पा० ४।४।६०॥ अस्ति परलोकः इत्येवं मतिर्यस्य स आस्तिकः। नास्तीति मतिर्यस्य स नास्तिकः।" इहलोक के उन्नति को अभ्युदय तथा परलोक प्राप्ति को निःश्रेयस कहते है। इसीलिये कणादने "यतोऽभ्युदयो निःश्रेयस प्राप्ति स धर्मः-वै० सू० १।१।२॥" कहा है। उपनिषद् मे इसे क्रमशः प्रेय और श्रेय कहा गया हैं। रामनाम के अभ्यास से दोनों लोकों मे सुख देनेवाला एवं दुःखों का हरण करनेवाला है। यह बात कपोल कल्पित नहीं हैं प्रत्युत इस में वेद और पुराण साक्षी (प्रमाण) हैं--

"नाम नाम्ना जोहवीति पुरा सूर्यात् पुरोषसः।
यदजः प्रयमं संबभूव सह तत् स्वराज्यमियाय
यस्मान्नान्यत् परमस्ति भूतम् ॥अथर्व० १०।७।३१॥"
"नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे।
इन्द्राभिमातिषाह्ये ॥ऋ० ३।३७।३॥"
"कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारुदेवस्य नाम।
को नो मो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं
मातरं च॥
अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य काम।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च॥
ऋ० १।२४।१–२॥"

"चारु इन्द्रस्य नाम—ऋ० ९।१०९।१४

इन वेद मन्त्रों (ऋ १।१२४।) में स्पष्ट रूप से "चारु देवस्य नाम' पद आया है। चारु शब्द राम शब्द का पर्याय शब्द है (बले रामो नील चारु सिते त्रिषु—अ को ३।३।१४०)। अतः 'चारु देवस्य नाम' का स्पष्ट अर्थ है—'राम देवस्य नाम' एवं 'चारु इन्द्रस्य नाम' का अर्थ 'राम परमैश्वर्यस्य परमेश्वरस्य नाम'।

पुराणों में तो रामनाम की महिमा का भण्डार है।

"विष्णोरेकैकनामैव सर्ववेदाधिकं मतम्।
तादृङ् नाम सहस्राणि रामनाम समंमतम्॥
जपतः सर्वमन्त्रांश्च सर्ववेदांश्च पार्वति।
तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते॥

पद्मपुराण, उत्तर० २८१।२७—२८॥"

श्रीरामनाम की विशेषता के सम्बन्ध में महारामायण में लिखा है—

"चिद्वाचको रकारः स्यात् सद्वाच्योऽकार उच्यते।
मकारानन्दवाची स्यात् सच्चिदानन्दमव्ययम्॥
रकारो हेतु वैराग्यं परमं यच्च कथ्यते।
अकारो ज्ञान हेतुश्च मकारो भक्ति हेतुकम्॥"

अतः आगे कहा गया है-'भक्ति ज्ञान के पंथ सूर ये'

भक्ति ज्ञान के पंथ सूर ये प्रेम निरंतर भाखिः-

'भक्ति ज्ञान के पंथ सूर ये' की उपपत्ति ऊपर की जा चुकी है।

पुनः-"रमते सर्वभूतेषु स्थावरेषु चरेषु च।
अन्तरात्मस्वरूपेण यच्च रामेति कथ्यते ॥स्क०पु०॥
से ये भक्ति के पंथ तथा-

"रमन्ते योगिनोऽस्मिन् सत्यानन्दे चिदात्मनि।
इति राम पदेनासौ पर ब्रह्माभिधीयते ॥रामतापनी०॥"

से ज्ञान का पंथ प्रतिपादित है। पुनः 'रामहि केवल प्रेम पिआरा। जानि लेहि सो जाननि हारा ॥" मिलहि न रघुवर बिनु अनुरागा। कियेहु कोटि जप योग बिरागा ॥" से 'राम प्रेम मूरति तनु आहीं' सिद्ध हैं अतः प्रेम निरन्तर भाखि का कथन भी सिद्ध है।

इस प्रकार श्री सूरदासजी का उपरोक्त पद्य का एक एक पद एवं अक्षर प्रमाणपुष्ट हैं तथा रामनाम अद्भुत (विलक्षण) सिद्ध हैं। श्री सूरदासजी का तात्पर्य रामनाम को आध्यात्मिक पंथ के दोनों किनारा (ज्ञान-भक्ति) बतलाकर उसपर अग्रसर होने में हैं। किसी भी मार्ग का दो किनारा होता है। इस प्रेममार्ग के दो किनारे क्रमशः ज्ञान और भक्ति हैं तथा यह प्रेम मार्ग है। इसी पर चलने का उपदेश है। ओ३म् शान्तिः।